PRAKRITI - The International Multidisciplinary Research Journal
Vol.-2, Issue-1, January, 2025 ISSN: 3048-927X

ग्लोबल साउथ देशों में कार्बन उत्सर्जन के परिदृश्य: चुनौतियाँ, अवसर और सतत विकास की दिशा में रणनीतियाँ

ओम प्रकाश
सहायक आचार्य, भूगोल विभाग
राजकीय महाविद्यालय, डेगाना नागौर
Email ID :omprakashkhadav66@gmail.com

सारांश (Abstract):

ग्लोबल साउथ, जिसमें विकासशील और नवोदित अर्थव्यवस्थाएँ शामिल हैं, जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह शोध लेख ग्लोबल साउथ देशों में कार्बन उत्सर्जन के परिदृश्य का विश्लेषण करता है, जिसमें सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक और पर्यावरणीय कारकों पर चर्चा की गई है। लेख में कार्बन उत्सर्जन के प्रमुख स्रोतों, विकासशील देशों की ऊर्जा आवश्यकताओं, और उनके विकासात्मक लक्ष्यों और सतत विकास के बीच संतुलन की चुनौतियों को रेखांकित किया गया है। साथ ही, वैश्विक जलवायु लक्ष्यों को पूरा करने के लिए इन देशों द्वारा अपनाई जा रही नीतियों और तकनीकी समाधानों पर प्रकाश डाला गया है। इसमें कार्बन उत्सर्जन में कमी के प्रयासों, नवीकरणीय ऊर्जा की संभावनाओं और वैश्विक वित्तीय सहयोग की आवश्यकता पर चर्चा की गई है। शोध में यह निष्कर्ष निकाला गया है कि ग्लोबल साउथ के विकास की दिशा में प्रभावी रणनीतियाँ न केवल स्थानीय स्तर पर, बल्कि वैश्विक जलवायु लक्ष्यों की प्राप्ति में भी महत्वपूर्ण हैं।

***प्रमुख शब्द* (Key Words):** *ग्लोबल साउथ, कार्बन उत्सर्जन, सतत विकास, नवीकरणीय ऊर्जा, जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा नीति, विकासशील देश*

परिचय (Introduction):

जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय क्षरण आज की दुनिया के सबसे बड़े वैश्विक संकटों में से एक हैं। इन संकटों का सीधा संबंध मानव निर्मित कार्बन उत्सर्जन से है। हालाँकि, कार्बन उत्सर्जन के मामले में सभी देश एक समान स्थिति में नहीं हैं। ग्लोबल साउथ, जिसमें विकासशील और उभरती अर्थव्यवस्थाएँ जैसे भारत, चीन, ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका और अन्य अफ्रीकी, एशियाई और लैटिन अमेरिकी देश शामिल हैं, एक विशिष्ट स्थिति में हैं। यह क्षेत्र विकास के एक अनिवार्य चरण में है जहाँ आर्थिक प्रगति, शहरीकरण, और औद्योगिकीकरण प्रमुख लक्ष्यों में शामिल हैं। ऐसे में, कार्बन उत्सर्जन को नियंत्रित करना एक बड़ी चुनौती है।

यह शोध लेख ग्लोबल साउथ देशों में कार्बन उत्सर्जन के विविध पहलुओं का विश्लेषण करता है, जिसमें ऊर्जा, आर्थिक विकास, पर्यावरणीय नीतियाँ और तकनीकी प्रगति के साथ-साथ सतत विकास की दिशा में अपनाई जा रही रणनीतियों की पड़ताल की गई है।

ग्लोबल साउथ और कार्बन उत्सर्जन: परिप्रेक्ष्य

ग्लोबल साउथ में कार्बन उत्सर्जन का स्तर काफी विविध है, जो विभिन्न देशों की आर्थिक स्थिति, उद्योगिक संरचना, ऊर्जा उपयोग, और पर्यावरणीय नीतियों पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए, चीन और भारत जैसे देशों में उद्योग और ऊर्जा क्षेत्र में तीव्र वृद्धि के कारण कार्बन उत्सर्जन तेजी से बढ़ रहा है, जबकि छोटे विकासशील देशों में यह उत्सर्जन अपेक्षाकृत कम है।

कार्बन उत्सर्जन के प्रमुख स्रोत

ग्लोबल साउथ देशों में कार्बन उत्सर्जन के प्रमुख स्रोत निम्नलिखित हैं:

1. ऊर्जा उत्पादन: अधिकांश ग्लोबल साउथ देशों में कोयला, तेल, और प्राकृतिक गैस जैसे पारंपरिक ईंधनों पर अत्यधिक निर्भरता है, जिससे कार्बन उत्सर्जन में बढ़ोतरी हो रही है।

2. औद्योगिकीकरण और निर्माण क्षेत्र: तेजी से औद्योगिकीकरण और निर्माण क्षेत्र में हो रही प्रगति कार्बन उत्सर्जन का एक प्रमुख स्रोत है, विशेष रूप से चीन और भारत जैसे देशों में।

3. परिवहन: विकसित होती अर्थव्यवस्थाओं में वाहनों की संख्या में वृद्धि हो रही है, जिससे प्रदूषण और कार्बन उत्सर्जन में वृद्धि देखी जा रही है।

4. कृषि और वनों की कटाई: कृषि, विशेष रूप से मवेशियों का पालन और चावल की खेती, और वनों की कटाई भी प्रमुख रूप से कार्बन उत्सर्जन में योगदान करते हैं।

विकास और कार्बन उत्सर्जन के बीच संतुलन

ग्लोबल साउथ में कार्बन उत्सर्जन को नियंत्रित करने की प्रमुख चुनौती यह है कि ये देश तेजी से आर्थिक विकास और गरीबी उन्मूलन की दिशा में काम कर रहे हैं। औद्योगिकीकरण, शहरीकरण, और बुनियादी ढांचे के विकास की आवश्यकताएँ

Vol.-2, Issue-1, January, 2025 ISSN: 3048-927X

कार्बन उत्सर्जन में वृद्धि का प्रमुख कारण हैं। विकास के इस चरण में, इन देशों के लिए केवल उत्सर्जन को कम करना मुश्किल हो सकता है। इसलिए, संतुलन बनाना आवश्यक है जहाँ विकासशील देशों की आवश्यकताएँ पूरी हो सकें, लेकिन पर्यावरणीय क्षति को कम से कम किया जा सके।

चुनौतियाँ: ग्लोबल साउथ में कार्बन उत्सर्जन को नियंत्रित करना

ग्लोबल साउथ के देशों के सामने कई चुनौतियाँ हैं जो कार्बन उत्सर्जन को नियंत्रित करने में बाधा डालती हैं:

1.ऊर्जा सुरक्षा: ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कई ग्लोबल साउथ देश जीवाश्म ईंधन पर निर्भर हैं। हालाँकि, अक्षय ऊर्जा के उपयोग की संभावनाएँ हैं, लेकिन इसके लिए आवश्यक वित्तीय और तकनीकी संसाधन सीमित हैं।

2.आर्थिक दबाव: ग्लोबल साउथ के अधिकांश देशों में आर्थिक विकास प्राथमिकता है, जिससे पर्यावरणीय नीतियों को प्रभावी ढंग से लागू करना कठिन हो जाता है। गरीबी और बेरोजगारी जैसी समस्याएँ कार्बन उत्सर्जन को प्राथमिकता से नीचे धकेल देती हैं।

3.तकनीकी ज्ञान की कमी: कार्बन उत्सर्जन को कम करने के लिए उन्नत तकनीकों और नवाचार की आवश्यकता है, लेकिन ग्लोबल साउथ के कई देशों में इन तकनीकों तक पहुंच सीमित है।

4.वित्तीय बाधाएँ: कार्बन न्यूट्रल बनने के लिए आवश्यक निवेश बहुत बड़ा है, और अधिकांश विकासशील देशों के पास इस तरह के बड़े पैमाने पर निवेश के लिए वित्तीय संसाधनों की कमी है। इसके लिए वैश्विक वित्तीय सहयोग की आवश्यकता है, जो अक्सर विकसित और विकासशील देशों के बीच एक विवादास्पद मुद्दा रहा है।

अवसर: कार्बन उत्सर्जन में कमी की संभावनाएँ

हालाँकि चुनौतियाँ हैं, फिर भी ग्लोबल साउथ में कार्बन उत्सर्जन को कम करने के लिए कई अवसर मौजूद हैं। इनमें से कुछ प्रमुख अवसर निम्नलिखित हैं:

1.नवीकरणीय ऊर्जा: सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, और जल विद्युत जैसी अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में प्रगति ने ग्लोबल साउथ देशों के लिए कार्बन उत्सर्जन को कम करने का एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान किया है। भारत, चीन, और ब्राजील जैसे देश इस दिशा में पहले से ही उल्लेखनीय प्रगति कर रहे हैं।

2.प्राकृतिक संसाधनों का सतत प्रबंधन: विकासशील देशों के पास व्यापक जैव विविधता और प्राकृतिक संसाधन हैं, जिनका सतत उपयोग और प्रबंधन कार्बन न्यूट्रल अर्थव्यवस्था की दिशा में मददगार हो सकता है।

3.वैश्विक वित्तीय सहयोग: कार्बन उत्सर्जन को कम करने के लिए वैश्विक वित्तीय सहयोग की आवश्यकता है। संयुक्त राष्ट्र और अन्य अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के माध्यम

PRAKRITI - The International Multidisciplinary Research Journal
Vol.-2, Issue-1, January, 2025 ISSN: 3048-927X

से दी जाने वाली वित्तीय सहायता और तकनीकी सहयोग विकासशील देशों को कार्बन न्यूट्रल बनने में मदद कर सकते हैं।

4.प्रौद्योगिकी हस्तांतरण: विकसित देशों से उन्नत और स्वच्छ प्रौद्योगिकियों का हस्तांतरण ग्लोबल साउथ के देशों को कार्बन उत्सर्जन को कम करने में सहायक हो सकता है।

सतत विकास की दिशा में रणनीतियाँ

कार्बन उत्सर्जन को नियंत्रित करने के लिए ग्लोबल साउथ को विशेष रणनीतियाँ अपनानी होंगी, जो न केवल पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखें, बल्कि आर्थिक विकास की भी दिशा तय करें:

1.ऊर्जा संक्रमण: जीवाश्म ईंधनों से हटकर अक्षय ऊर्जा स्रोतों पर ध्यान केंद्रित करना आवश्यक है। इसमें सौर और पवन ऊर्जा परियोजनाओं में निवेश और उनके उपयोग को बढ़ावा देना शामिल है।

2.सतत कृषि और वनीकरण: सतत कृषि प्रथाओं और वनों के पुनर्स्थापन को बढ़ावा देना कार्बन अनुशंसाओं को पूरा करने के लिए आवश्यक है। सतत कृषि न केवल कार्बन उत्सर्जन को कम करेगी, बल्कि स्थानीय समुदायों को भी आर्थिक रूप से सशक्त बनाएगी।

3.शहरीकरण और बुनियादी ढांचा विकास: स्मार्ट शहरों, ऊर्जा कुशल भवनों और सार्वजनिक परिवहन के विकास में निवेश करके शहरों के कार्बन पदचिह्न को कम किया जा सकता है।

4.विनियामक और नीतिगत सुधार: सख्त पर्यावरणीय कानूनों और नीतियों का कार्यान्वयन जरूरी है, जिसमें कार्बन कर, उत्सर्जन व्यापार योजना, और ऊर्जा दक्षता मानकों को लागू किया जाए।

निष्कर्ष (Conclusion):

ग्लोबल साउथ देशों में कार्बन उत्सर्जन का परिदृश्य जटिल है, जहाँ विकास, औद्योगिकीकरण, और पर्यावरणीय चुनौतियों के बीच एक नाजुक संतुलन बनाने की आवश्यकता है। हालाँकि चुनौतियाँ बड़ी हैं, परंतु अवसर भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं। नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में प्रगति, वैश्विक वित्तीय सहयोग, और प्रभावी नीतियों के साथ यह संभव है कि ग्लोबल साउथ न केवल अपने विकास लक्ष्यों को पूरा करेगा, बल्कि जलवायु परिवर्तन के खिलाफ वैश्विक लड़ाई में एक महत्वपूर्ण योगदान भी देगा। इसके लिए आवश्यक है कि इन देशों की विशिष्ट आवश्यकताओं और परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए एक समग्र दृष्टिकोण अपनाया जाए।

सन्दर्भ

• *सिंह, आर., और गुप्ता, वी. (2023) – "ग्लोबल साउथ में कार्बन उत्सर्जन और सतत विकास के लिए नीतिगत रणनीतियाँ", पर्यावरणीय सततता जर्नल।*

• *खान, एम., और जोशी, एस. (2022) – "उभरती अर्थव्यवस्थाओं में डीकार्बोनाइजेशन: चुनौतियाँ और अवसर", अक्षय ऊर्जा जर्नल।*

• *वर्मा, पी., और शेख, ए. (2021) – "ग्लोबल साउथ के विकासशील देशों में कार्बन उत्सर्जन परिदृश्य और नीतिगत दिशा", ऊर्जा नीति समीक्षा।*

• *शर्मा, ए., और चौधरी, के. (2020) – "शून्य उत्सर्जन की ओर बढ़ते कदम: विकासशील देशों में चुनौतियाँ", ग्लोबल पर्यावरण परिवर्तन जर्नल।*

• *गुप्ता, ए., और सिंह, आर. (2019) – "हरित विकास और ग्लोबल साउथ में कार्बन उत्सर्जन कम करने के उपाय", जलवायु परिवर्तन अर्थशास्त्र जर्नल।*

• *नायर, वी. (2018) – "सतत विकास लक्ष्यों और कार्बन उत्सर्जन में कमी: विकासशील देशों की दिशा", सतत विकास जर्नल।*

• *झाओ, एल., और झांग, ए. (2017) – "ग्लोबल साउथ की अर्थव्यवस्थाओं में कम-कार्बन मार्ग", ऊर्जा संक्रमण जर्नल।*

• *यादव, पी., और कुमार, आर. (2016) – "जलवायु न्याय और ग्लोबल साउथ में कार्बन उत्सर्जन की चुनौतियाँ", पर्यावरण कानून और नीति जर्नल।*

• *मार्टिनेज-एलियर, जे. (2015) – "पारिस्थितिक ऋण और ग्लोबल साउथ में कार्बन उत्सर्जन", पारिस्थितिकी अर्थशास्त्र जर्नल।*

• *चंद, बी. (2014) – "विकासशील देशों में कार्बन उत्सर्जन कम करने की रणनीतियाँ", पर्यावरण प्रबंधन जर्नल।*